प्रसार पुस्तिका संख्याः- DEE/2021/20

नवजात बच्छे/बच्छियों की मुख्य बीमारियाँ व उनकी रोकथाम

बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय
BIHAR ANIMAL SCIENCES UNIVERSITY

प्रसार शिक्षा निदेशालय
बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना-14

नवजात बच्चे/बच्चियों की मुख्य बीमारियाँ व उनकी रोकथाम

नवजात बच्चे/बच्चियों का बीमारियों से बचाव बहुत आवश्यक है क्योंकि छोटी उम्र के बच्चों में कई बीमारियाँ उनकी मृत्यु का कारण बनकर पशुपालक को अधिक हानि पहुँचाती है। नवजात बच्चे/बच्चियों की प्रमुख बीमारियाँ निम्नलिखित है।-

काफ अतिसार (काफ डायरिया व्यायटस्कौर/कोमनस्कौर)

छोटे बच्चों में दस्त उनकी मृत्यु के प्रमुख कारण है। बच्चे में दस्त लगने के अनेक कारण हो सकते हैं। जिनमे अधिक मात्रा में दूध पी जाना, पेट में संक्रमण होना। पेट मे कीड़ा होना आदि शामिल होना है। इस वजह से बच्चे को दूध उचित मात्रा में दूध पिलाना चाहिए। यह मात्रा बाछे के वजन का 1/10 भाग पर्याप्त होती है। अधिक मात्रा में दूध पिलाने से बच्चा उसे हजम नहीं कर पाता है और वह सफेद अतिसार का शिकार हो जाता है। कई बार बच्चा खूंटे से स्वंग खुलकर माँ का दूध अधिक मात्रा में पी जाता है। ऐसी अवस्था में बच्चे को एंटीबायोटिक्स अथवा कई अन्य एंटीबैक्ट्रीयल दवा देने की आवश्यकता पड़ती है। जिसे मुँह अथवा इंजेक्शन के द्वारा दिया जा सकता है। बार-बार दस्त होने पर उनके शरीर में पानी की कमी हो जाने पर उसे ओ. आर. एस का घोल अथवा इंजेक्शन द्वारा डेक्ट्रोज सेलान दिया जाता है। पेट के संक्रमण के उपचार के लिए गोबर के नमूने के परीक्षण कर उचित दवा का प्रयोग किया जा सकता है। कई बच्चों मे कोक्सीडियोसिस से खुनी दस्त अथवा पेचिस लग जाते हैं। जिसका उपचार कोक्सीडियोस्टेट दवा का प्रयोग किया जाता है।

पेट मे कीड़ें (जूने) हो जाना

प्रायः गाय अथवा भैंस के बच्चों के पेट में कीड़े हो जाते हैं। जिससे वे काफी कमजोर हो जाते हैं।इसमें बच्चे को गस्त अथवा कब्ज लग जाते हैं। पेट के कीड़ों के उपचार के लिए पिपराजीन

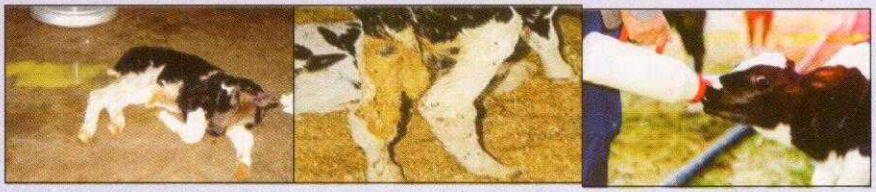

दवा प्रयोग सर्वोतम है। गर्भवस्था के अंतिम अवधि में गाय व भैंस को कीड़े मारने की दवा के प्रयोग से बच्चों में जन्म के समय पेट में कीड़े नहीं होते हैं। बच्चों को लगभग 6 माह की आयु होने तक हर ढ़ेर से दो महीने के अंतराल पर नियमित रूप से पेट के कीड़े मारने की दवा (पिपरिजिन लिक्विड अथवा गोली) अवश्य देंनी चाहिए।

नाभि का सड़ना (नेवलइल)

कई बार नवजाम बच्चे/बच्चियों की नाभी में संक्रमण हो जाता है,जिससे नाभी सूज जाती है तथा उसमें पिव भर जाता है। कभी-कभी मक्खियों के बैठने से उसमें(मेगिटस) कीड़े भी हो लग

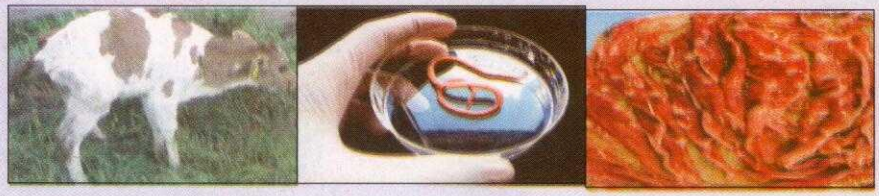

जाते हैं। इस बीमारी के हो जाने पर नजदीक के पशुचिकित्सालय में जाकर ठीक प्रकार से ईलाज कराना चाहिए अन्यथा कई और जटिलता उत्पन्न होकर बच्चे की मृत्यु होने का भी खतरा हो सकता है। बच्चे के पैदा होने के बाद उसकी नाभी को सी स्थान से काट कर उसको नियमित रूप से एंटीसेप्टिक ड्रेसिंग करने तथा इसे साफ स्थान पर रखने से इस बीमारी को रोका जा सकता है।

निमोनिया

बच्चों का यदि खासतौर पर सर्दियों में पूरा ध्यान न रखा जाय तो उसको निमोनिया रोग होने की प्रबल संभावना होती है। इस बीमारी में बच्चों को ज्वर के साथ खांसी तथा सांस लेने में तकलीफ हो जाती है तथा वह दूध पीना बंद कर देता है। यदि समय पर इसका इलाज ना कराया जाय

तो बच्चे की मृत्यु भी हो जाती है। एंटीबायोटिक अथवा अन्य रोगाणुरोधक दवाईयों के उचित प्रयोग से इस बीमारी को ठीक किया जा सकता है।

जाड़ों तथा बरसात के मौसम में बच्चों के उचित देखभाल करके उन्हें इस बीमारी से बचाया जा सकता है।

टायफाईड (साल्मोनेल्लोसिस)

यह भयंकर तथा छूत रोग बैक्टीरिया के द्वारा फैलता है। ईलाज के आभाव में मृत्यु दर काफी अधिक हो सकती है। इस बीमरी में एंटीबेट्रीयल दवाओं का प्रयोग किया जाता है। इसमें पशु को बुखार तथा खूनी दस्त लग जाती है। प्रभावित पशु को अन्य पशुओं से अलग रखकर इसका

उपचार करना चाहिए। पशुशाला की यथोचित सफाई रखकर तथा बछड़े-बछड़ियों की उचित देखभाल द्वारा इस बीमारी को नियंत्रित किया जा सकता है।

मुंह व खुर की बीमारी (फुट एंड माउथ डिजीज)

बड़े उम्र के पशुओं मे तेज बुखार होने के साथ-साथ मुंह व खुर में छाले व घाव होने के लक्षण पाये जाते हैं। लेकिन बछड़े-बछड़ियों में मुंह व खुर के लक्षण बहुत कम देखे जाते हैं। बच्चों में यह रोग उनके हृदय पर असर करता है। जिससे थोड़े ही समय में उनकी मृत्यु हो जाती है। हालांकि वायरस (विसाणु) से होने वाली इस बीमारी का कोई ईलाज नहीं है, लेकिन बीमारी हो जाने पर पशु

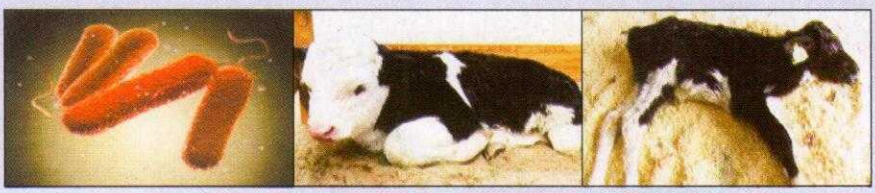

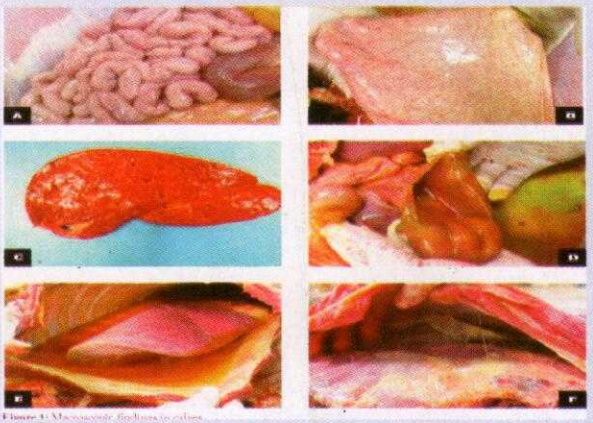

चिकित्सक की सलाह से बीमारी को जीवाणु संक्रमण से अवश्य बचाया जा सकता है। यदि मुंह व खुर में घाव होती है तो उन्हें पोटाशियमपरमेंगनेट 0.1 प्रतिशत घोल से साफ करके मुंह में बोरो-ग्लिसरीन तथा खुरों में फिनाईल व तेल लगाना चाहिए।

रोग के नियंत्रण के लिए स्वस्थ्य बच्चों को बीमार पशुओं से दूर रखना चाहिए। बीमार पशुओं की देखभाल करने वाले व्यक्ति को स्वस्थ्य पशुओं के पास नहीं आना चाहिए। बच्चों को सही समय पर रोग निरोधक टीके लगाना चाहिए। बच्चों में यह बीमारी की रोकथाम के लिए पहला टीका एक माह तथा दूसरा टीका तीन माह तथ तीसरा छः माह की अवधी में लगानी चाहिए। उसके पश्चात छः-छः महीने के बाद नियमित रूप में यह टीका लगाना चाहिए।

आलेख एवं प्रस्तुतिकरणः- कौशल कुमार एवं ज्ञानदेव सिंह

विशेष जानकारी के लिए सम्पर्क करें:-

निदेशक,प्रसार शिक्षा

बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय,पटना-14

Email: deebasupatna@gmail.com (Official), dee-basu-bih@gov.in

Mob.: +91 94306 02962,+91 80847 79374

First Print: 7992457574/ March 2021 Printed Under - SC -PLAN